साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित लेखक से भेंट कार्यक्रम में शामिल हुए अमीश त्रिपाठी

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

भारतीय अंग्रेजी लेखक निर्माता प्रस्तुतकर्त्ता तथा भारतीय उच्चायोग लंदन में मंत्री संस्कृति एवं नेहरू केंद्र के निदेशक अमीश त्रिपाठी गुरूवार को साहित्य अकादेमी के प्रतिष्ठित कार्यक्रम लेखक से भेंट में आमंत्रित लेखक थे। कार्यक्रम के आरंभ में उन्होंने दुनिया की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में भारत की संस्कृति के अभी तक निरंतर प्रवाहमान होने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऐसा इसलिए संभव हो पाया कि भारतीय संस्कृति ने अपनी मूल आत्मा को बचाते हुए अपने को समावेशी बनाए रखा है। हमारी प्राचीन कहानियां वही हैं लेकिन हर क्षेत्र और प्रांत में उसके कथानक बदल गए हैं। अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि जैसे वाल्मीकि रामायण में लक्ष्मण रेखा वाला प्रसंग नहीं है या जैन रामायण में रावण को राम ने नहीं बल्कि लक्ष्मण ने मारा है। इतना ही नहीं वाल्मीकि अद्भुत रामायण में सीता रावण को मारती हैं। रामचरित मानस में भी मूल वही कहानी हैए लेकिन उसके प्रसंग बदले हुए हैं। इसके बाद उपस्थित श्रोताओं ने उनके साथ संवाद किया। एक प्रश्न जोकि भारत के तीन नामों भारतए इंडियाए हिंदुस्तान के संबंध में था,का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि शब्द अलग-अलग समय में अपना अर्थ बदलते हैं। भारतवर्ष एक बड़े भूखंड की परिकल्पना पर आधारित नाम थाए इंडिया ब्रिटिशों द्वारा प्रचारित नाम था और हिंदुस्तान मध्यकालीन भारत का प्रतिनिधित्व करता था। आज भारत एक संवैधानिक राष्ट्र है और उसकी सीमाएं निर्धारित हैं। अतः संविधान में स्वीकृत नाम ही हमें मानना चाहिए। संस्कृति और अर्थव्यवस्था के संबंधों को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि प्राचीन भारत यूरोप और अन्य कई देशों से समुद्री व्यापार के कारण सर्वश्रेष्ठ था।

तो आज भी वह लगभग उसी मुकाम पर पहुंच रहा है। युवा पीढ़ी की भारतीय संस्कृति में रुचि के सवाल के उत्तर में उन्होंने कहा कि हमें इसके लिए युवाओं को दोषी ठहराने की जरूरत नहीं है, इसका कारण हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली है जो आज भी कोलोनियल है